# भारतीय राजनैतिक व्यवस्था के बारे में राहुल सांकृत्यायन का दृष्टिकोण

**अवधेश कुमार***

महापंडित राहुल सांकृत्यायन एक महान रचनाकार, अन्वेषी इतिहासकार और जनयोद्धा थे। भारतीय नवजागरण की चेतना के इस महान अग्रदूत ने हिंदी भाषा और साहित्य को प्रगतिशील और प्रौढ़ वैचारिक मूल्यों से जोड़ते हुए एक नई रचना संस्ति विकसित की। व्यक्तित्व की तरह उनका रचना संसार भी व्यापक और बहुआयामी हैं। सचमुच आश्चर्य होता है कि किशोरावस्था में ही घर –बार छोड़ कर संन्यासी बन गए राहुल व्यवस्थित शिक्षा, दीक्षा और समय एवं सुविधा संबंधी कठिनाइयों के बावजूद इतने महान रचनाकार और बुद्धिजीवी कैसे बने, वे वर्ग संघर्ष के द्वारा किसानों और श्रमिकों में राजनीतिक चेतना जागृत कर भारत में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे।

राहुल सांकृत्यायन स्वीकार करते हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता ही सभी स्वतंत्रताओ की जननी है। इसके लिए राहुल भूमि का राष्ट्रीयकरण चाहते थे। राहुल ने सामुहिक खेती की बात की। राहुल सिर्फ किसानों के लिए क्रांति चाहते थे, खेतिहर मजदूरों के लिए नहीं। वे खेतिहर मजदूरों को जमींदारों के इशारों पर किसानों के खिलाफ लड़ने वाला मानते थे। उनका मानना था कि जब किसानों की समस्या हल हो जाएगी यानी जब उनकी आमदनी बढ़ जाएगी खेतिहर मजदूरों की समस्या स्वतः हल हो जाएगी। उनकी आमदनी भी बढ़ जाएगी।[1]

राहुल सां.त्यायन की नजर में रूढ़ियों को तोड़ने का काम जेल जाने या फाँसी चढ़ने से भी ज्यादा साहस का काम है। वे लिखते हैं साम्यवादियों को इसे तो पहला सामाजिक नियम बना देना चाहिए कि इसमें आनेवाला हिन्दू हो या मुसलमान, छूत हो या अछूत इसे एक साथ खाना–पीना चाहिए। उनकों यह ख्याल नहीं रखना चाहिए कि साधारण लोग क्या कहेंगे। किसी भी सामाजिक या राजनीतिक क्रांति में शामिल होने वाले को कुछ कड़वा–मीठा सहने के लिए तैयार होना ही चाहिए। लोग जेल जाने या फाँसी चढ़ जाने को बड़ी हिम्मत की बात करते हैं। समाज की रूढ़ियों को तोड़ना और उसके द्वारा उनकी आँखों में काँटे की तरह चुभना जेल और फाँसी से ज्यादा साहस का काम है।[2]

***शोधार्थी इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा**

राहुल मार्क्सवादी हो चुके थे पर अभी भी भिक्षु भेष नहीं त्यागा था। उन्होंने नेपाल, श्रीलंका, तिब्बत, जापान, कोरिया, मंचूरिया, लंदन आदि बौद्ध देशों की यात्राओं के लिए भिक्षु भेष का उपयोग किया और बाद में त्याग दिया। राहुल की जीवन यात्रा एक स्थान या एक विचार पर स्थिर रहने वाली नहीं थी। वे ऐसे प्रगतिशील थे जो खूंटे से बांधकर नहीं रह सकते थे। बौद्ध के बाद वे मार्क्सवादी हो गए और भौतिकवाद उनका दर्शन हो गया। वे साम्यवाद में ही खेतिहर मजदूरों की आर्थिक मुक्ति मानते थे।वे लिखते है कि ''खेतिहर मजदूरों का ख्याल करना चाहिए कि उनकी आर्थिक मुक्ति साम्यवाद से ही हो सकती हैं और जो क्रांति आज शुरू हुई है, वह साम्यवाद पर ही ले जाकर रहेगी। उसके सिवाय भले दिनों की दिखलाने वाला कोई दूसरा रास्ता नहीं है।''[3]

राहुल सांकृत्यायन केवल एक महान विद्वान ही नहीं थे बल्कि एक महान स्वतंत्रता सेनानी तथा किसानों के पक्ष में सशक्त आंदोलन करने वाले एक जनयोद्धा भी थे। स्वंतत्रता आंदोलन के इतिहास में उनका अमूल्य योगदान है। वे अनेकों बार जेल गए तथा किसान आंदोलन का संचालन करते हुए सिवान जिले के सिसवन ब्लॉक के अमवारी गाँव में जमींदारों के लठैतो द्वारा पीटे भी गए जिससे उनका सर भी फट गया। हिंदी के महान कवि मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने ''राहुल का खून पुकार रहा'' ''शीर्षक कविता भी लिखी''।[4]

राहुल सांकृत्यायन सामंतवाद और पूंजीवाद की चक्की में पीस रही आम जनता की मुक्ति के दृष्टिकोण से धर्म को देखने लगे थे। इस दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म के भी अनेक सिद्धान्तों से उनकी असहमति बन गई थी। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे की बुद्ध तत्कालीन समाज–व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे। उनका मानना था कि दुख और उसकी जड़ को समाज में न ख्याल कर व्यक्ति में उसे देखने की कोशिश की। भोग की तृष्णा के लिए राजाओं, क्षत्रीयों, ब्राह्मणों, वैश्यों और सारी दुनिया को झगड़ते, मर–मारते देख भी उस तृष्णा को व्यक्ति से हटाने की कोशिश की।[5]

उन्होंने कहा कि असली शत्रु वे लोग नहीं है, जो जाति को मानते है बल्कि वे शास्त्र हैं जिन्होंने जाति–धर्म की शिक्षा दी है। रोटी–बेटी का संबंध न करने या समय–समय पर अन्तर्राजिये विवाहों का आयोजन न करने के लिए लोगों की आलोचना या उनका उपहास करना वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने का एक निर्रथक तरीका है। वास्तविक उपचार यह है कि शास्त्रों ने लोगों के धर्म, विश्वास और विचारों को ढालना जारी रखा तो आप कैसे सफल होंगे।[6]

बुद्ध के क्षणिकवाद के दर्शन से राहुल जी सहमत थे। उनकी टिप्पणी थी कि इस क्षणिकवाद को उन्होंने समाज की आर्थिक व्यवस्था पर लागू नहीं किया

था। वे इसका कारण बताते हैं कि ऐसा उन्होंने राजाओं और सेठों को अप्रसन्न करने के उद्देश्य से नहीं किया। वे लिखते हैं कि पुरोहित वर्ग के कुटदंत, सोंनदन्त जैसे धनी प्रभुताशाली ब्राह्मण उनके अनुयायी बनते थे। राजा लोग उनकी आवभगत के लिये उतावले दिखायी पड़ते थे। उस वक्त का धन कुबेर व्यापारी वर्ग तो उससे भी ज्यादा उनके सत्कार के लिए अपनी थैलियां खोले रहता था, जितने की आज के भारतीय महासेठ गाँधी के लिए। दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम भारत के साथ व्यापार के महान केंद्र कौशाम्बी के तीन भारी सेठों ने विहार बनवाने की होड़ सी कर ली थी। सच तो यह है कि बुद्ध के धर्म को फैलाने में राजाओं से भी अधिक व्यापारियों ने सहायता की।[7]

राहुल जी का वक्तव्य बताता है कि उन्हें बुद्ध के दर्शन ने इतना प्रभावित किया कि न केवल डार्विन के विकासवाद में उनको सच्चाई आने लगी थी, बल्कि मार्क्सवाद की सच्चाई भी उनके हृदय और मस्तिष्क में पेबस्ता जान पड़ने लगी थी। उस समय तक वे समाजवादी व्यवस्था के महत्व को समझने लगे थे और बुद्ध उन्हें स्वतंत्रता, समानता और करुणा के समर्थक एवं जनतंत्र के पक्षधर के रूप में दिखाई देने लगे थे। वे बुद्ध की प्रजातांत्रिक विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए थे।[8]

राहुल सांकृत्यायन चाहते थे कि जमींदारी हटा दिया जाय। खेतों पर किसी भी व्यक्ति का अधिकार न होकर राष्ट्र का अधिकार हो। गाँव में सभी खेतों की मेड़ हटाकर एक खेत बना दिया जाय और ट्रैक्टर के जरिये खेत जोते जाय। लोग मिलकर सामूहिक खेती करें और उस खेती में नए आविष्कारों तथा .षि उपयोगी साधनों का प्रयोग किया जाय। तभी जाकर हम एक बीघे में जापान की तरह सात–आठ सौ रुपये की चीज पैदा कर सकेंगे और तभी जाकर यदि एक–दो जिलों में सुखा पड़ जाये तब भी दूसरे जिलों की पैदावार से लोगों को भूखा नहीं मरना पड़ेगा।राहुल यहाँ छोटी जोतों को बड़ी जोतों में बदलने और सामुहिक रूप से खेती करने की बात करते हैं। साथ ही वह यह भी कहते है कि खेती नई तकनीक से हो और खेतों पर राष्ट्र का अधिकार हो।[9]

**सारांश :–**राहुल सांकृत्यायन सनातनी साधु से आर्य समाजी बने, फिर बौद्ध बने और अंत में कम्युनिस्ट हो गये थे। राहुल ब्रिटिश हुकूमत, जमींदारी प्रथा पूँजीवादी व्यवस्था, सामंतवादी व्यवस्था आदि के घूर विरोधी थे। वे महान वक्ता, समाज सुधारक, दार्शनिक, स्वतंत्रता सेनानी और .षक जन आंदोलन के बहुत बड़े नेता थे। वे हमेशा वर्ग–संघर्ष के द्वारा किसानों, वंचितों और श्रमिकों की उत्थान की बात करते थे। राहुल सांकृत्यायन स्वीकार करते हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता ही सभी स्वतंत्रताओं की जननी है। वे भारत के समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के स्वप्नद्रष्टा थे।



**संदर्भ सूची :–**


1– राहुल सांकृत्यायन : दिमागी गुलामी, किताब महल 2006, पृष्ठ 46
2– डॉ0 आंबेडकर : सम्पूर्ण वाङमय, खंड–1 पृष्ठ 92
3– राहुल सांकृत्यायन : दिमागी गुलामी, पृष्ठ 53
4– प्रमिला विद्ययार्थी : सीवान जिले में स्वतंत्रता संग्राम, पृष्ठ 338
5– कवल भारती : राहुल सांकृत्यायन, साहित्य उपक्रम 2007 पृष्ठ 11
6– राहुल सांकृत्यायन : बोल्गा से गंगा, पृष्ठ 329
7– कवल भारती : राहुल सांकृत्यायन, साहित्य उपक्रम पृष्ठ 20
8– वहीं, पृष्ट 23
9– डॉ आंबेडकर : सम्पूर्ण वाङमय, खंड–2, पृष्ठ 212